15908

शिव दर्शन

अर्ध नारीश्वर शिव

लेखक

दुर्गा प्रसाद शर्मा

जिला सर्वोदय मण्डल, टीकमगढ (म:प्र:)

प्रकाशक :— जिला सर्वोदय मंडल
टीकमगढ़ (म0 प्र0)

संस्करण :— प्रथम

लोकार्पण :— 14 जनवरी "मकर संक्रांति"
वर्ष 2003

सहयोग राशि :— 25 (पच्चीस रूपये मात्र)
(यह सहयोग राशि सर्वोदय के कार्यों हेतु प्रयुक्त होगी)

कम्प्यूटर ग्राफिक्स :—राजीव कम्प्यूटर ग्राफिक्स
शिवम् टॉकीज रोड,
एम0 पी0 आयरन के सामने,
टीकमगढ़ (म0 प्र0)

चित्रांकन :— बद्री प्रसाद देवलिया
स्टूडियो निशा,
पुरानी तहसील प्रांगण
टीकमगढ़ (म0 प्र0)

मुद्रण :— गोपिका ऑफसेट
पुरानी तहसील प्रांगण, टीकमगढ़ (म0 प्र0)

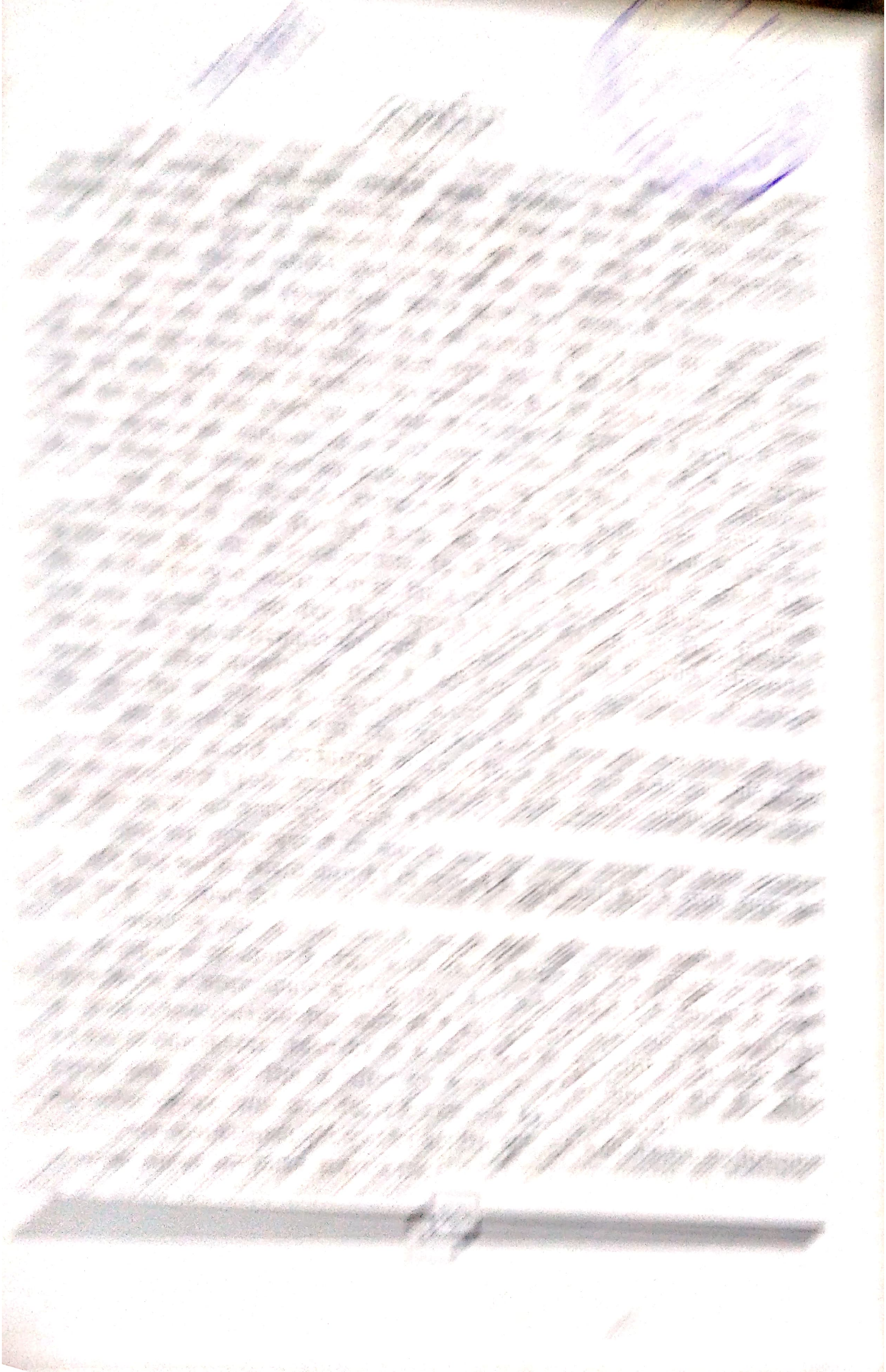

विषय सूची

प्रथम अध्याय

1 [illegible] 3

2 श्री शिवजी एवं जीवन संदेश 5

3 सामान्य जानकारी 13

4 विषय प्रवेश 16

द्वितीय अध्याय

1 चिति के रहस्य के सूत्र 33

2 परम तत्व की प्राप्ति के उपाय

3 जीवन अवतरण के सूत्र 53

4 चित्त विकास के सूत्र 61

5 सान्निध्य के सूत्र 67

तृतीय अध्याय

1 लिंग रहस्य 72

2 शिव का प्रगट रहस्य 77

3 अर्द्धनारीश्वर भगवान शिव 79

4 मृत्युन्जय शिव तत्व 81

5 द्वादश ज्योतिर्लिंग 83

6 शिवरात्रि 87

7 मार्कण्डेय 90

8 मध्य प्रदेश के शिव मंदिर 91

9 प्रयुक्त हुये कठिन शब्दों का स्पष्टीकरण 92

159-8
Distt Library Tikamgarh M.P.

विषपान करते शिव

प्रथम अध्याय

श्री शिवजी एवं जीवन संहिता

श्री तुलसीदास जी ने रामायण में प्रथम श्लोक में लिखा है :-

> " भवानी शंकरौ वन्दे श्रद्धा विश्वास रूपिणौ
> याभ्यां बिना पश्यन्ति सिद्धा स्वान्तस्थमीश्वरम्'

श्रद्धा और विश्वास इन दोनों का रूपक नाम पार्वती और शंकर दिया है। इन दोनों के बिना अपनी इष्ट सिद्धि को प्राप्त नहीं किया जा सकता। है। इसलिए तुलसीदास जी पार्वती और शंकर दोनों की वन्दना करते है।

मानव के जीवन की सिद्धि शिव का साक्षात्कार होना माना गया है। 'शिव' क्या है ? यदि गहराई की दृष्टि से देखें तो पता चलता है इसकी उत्पत्ति दो प्रकार से हुई है।

अदादि गण की 'शी' धातु से इस शिव की उत्पत्ति हुई है। जिसका अर्थ होता है 'शयन करना'। जिसमें सब कुछ शयन होता है। वह है शिव। दूसरे दिवादिगण के 'शो' धातु से इसकी उत्पत्ति हुई है। जिसका अर्थ होता है दुर्बल कर देना। जो सब दुखों को पापों को अत्याचारियों को दुर्बल कर देता है। नष्ट कर देता है वह है शिव। यह दोनों अर्थ शिव शब्द में निहित है। शिव सृष्टि का अधिष्ठान है। और वह परम कल्याणकारी है। अपने अनुग्रह से सब जीवों का उद्धार करता है। तात्विक और आध्यात्मिक दोनों दृष्टियों से सब का मूल है। भोग और मोक्ष सब उसी से होता है।

शब्द निरुक्ति से भी स्पष्ट होता है 'शं' का अर्थ है 'शान्ति'। जिससे शान्ति हो वह होता है शंभु। जो शान्ति को करने वाला है वह कहलाता है शंकर। सत्य अर्थात् वास्तविकता जो सही ज्ञान स्वरूप और प्रकाशरूप है। वही ईशान है। उसी की कथा है। समष्टिगत चेतना ही शिव है। यही ध्रुव सत्य और निश्चित है। तभी उसका रूपक तुलसीदास जी ने विश्वास दिया है।

इसी शिव को पहचानने और प्राप्त करने के लिए अपनी प्रयत्नशीलता तथा तपस्या के साथ समर्पण के भाव को श्रद्धा कहते है। जिसमें प्रेम पूर्ण संलग्नता अध्यवसाय

1590B

मुद्रण
गोपिका ऑफसेट
पुराना तहसील प्रांगण, टीकमगढ़